



भारत सरकार  
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय  
भारत मौसम विज्ञान विभाग

संस्करण - 6

वर्ष : 2019

# किरणें

जलवायु अनुसंधान एवं सेवाएँ का कार्यालय,  
भारत मौसम विज्ञान विभाग  
शिवाजीनगर  
पुणे - 411005

## किरणें

भारत मौसम विज्ञान विभाग की  
विभागीय हिंदी पत्रिका

### प्रमुख संरक्षक

डॉ. मृत्युंजय महापात्र  
मौसम विज्ञान के महानिदेशक

### संरक्षक

डॉ. डी. एस. पै  
प्रमुख, जलवायु अनुसंधान एवं सेवाएँ

### सम्पादक मंडल

डॉ. शिरिष खेडीकर, वैज्ञानिक - बी  
श्रीमती लता श्रीधर, मौ वि - ए  
श्री ओ. पी. चौधरी, मौ वि - ए  
श्री अश्विनी कुमार प्रसाद, वैज्ञानिक सहायक  
श्रीमती अपर्णा खेडकर, कनिष्ठ अनुवादक

### मुद्रण समिति

श्री जयेश शाह, वैज्ञानिक सहायक  
श्रीमती स्मिता नायर, मौ वि - ए  
श्रीमती सुष्मिता घोष, सहायक  
श्री पी. बी. पारखे, कनिष्ठ अनुवादक

### मुद्रक

विभागीय मुद्रणालय, पुणे

### विशेष आभार

श्री शेखर सूर्यवंशी, वैज्ञानिक सहायक

(‘किरणे’ में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण रचनाकार के हैं। भारत मौसम विज्ञान विभाग का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।)



महानिदेशक  
भारत मौसम विज्ञान विभाग  
मौसम भवन, लोदी रोड़  
नई-दिल्ली - 110003

महानिदेशक की कलम से ..

" किरणें " पत्रिका का छठवाँ संस्करण आपके समक्ष समर्पित है । मुझे इस बात की अत्यधिक प्रसन्नता है कि हमारे विभाग के " ख" और " ग " क्षेत्र में स्थित कार्यालयों में भी असीम उत्साह और लगन के साथ हिंदी के कार्य के प्रति समर्पण दिखाई दे रहा है , चाहे वह सरकारी कार्यों में हो, गृह पत्रिकाओं में लेख हों या फिर विभागीय हिंदी संगोष्ठियों में प्रतिभागिता हो ।

" किरणें" पत्रिका में रचनाकारों द्वारा प्रस्तुत ज्ञानवर्धक लेख, हिंदी भाषा को बढ़ावा देने का प्रयास कर रहे हैं और दूसरी ओर हमारे वैज्ञानिकों द्वारा कठिन से कठिन विषयों की बारीकियों को उजागर करने वाले लेख इतने सरल और सुबोध रूप में प्रस्तुत किए गए हैं कि मौसम के अध्ययन से जुड़े व्यक्ति हों या नहीं , सभी इनसे लाभान्वित होंगे ।

मुझे विश्वास है कि विकास के इस पथ पर " किरणें " बिखेरती हुई यह पत्रिका आपको पसंद आएगी ।

मृत्युंजय महापात्र

( मृत्युंजय महापात्र )



प्रमुख, जलवायु अनुसंधान एवं सेवाएं  
भारत मौसम विज्ञान विभाग,  
पुणे- 411005

## संदेश

हमारे लिए यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि मौसम विज्ञान विभाग, पुणे की हिंदी पत्रिका 'किरणें' के छठे संस्करण का विमोचन किया जा रहा है। इस पत्रिका के माध्यम से विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा रचित विभिन्न विषयों पर आधारित कविता, लेख, लघु कहानियां इत्यादि प्राकशित किया जा रहा है। मुझे यह देख कर और भी खुशी हो रही है कि इस लेखन कार्य में हिंदी भाषियों के अलावा उन लोगों का योगदान भी कम नहीं है जिनकी मातृभाषा हिंदी नहीं है।

भारतीय संविधान द्वारा 14 सितम्बर, 1949 को हिंदी को भारत संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया गया। हिंदी को बढ़ावा देने के लिए हर साल कार्यालय में 14 सितम्बर को हिंदी दिवस मनाया जाता है। इस वर्ष हिंदी पखवाड़ा में कुल बारह प्रतियोगिताएं हुई हैं। मुझे जान के ये खुशी है कि इस हिंदी पखवाड़ा में हमारे अधिकारी एवं कर्मचारी बढ़-चढ़ कर भाग ले रहे हैं।

हमारे विभाग के लोगों ने जिस उत्साह और प्रेरणा से विविध विषयों पर काव्य एवं लेखों का सृजन किया है उनकी मैं बहुत सराहना करता हूँ। इस पत्रिका 'किरणें' के माध्यम से आप लोग आगे भी आपने भाव इसी प्रकार व्यक्त करते हुए राजभाषा हिंदी का व्यवहार फैलाते रहेंगे।

मेरी हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ।

Dr. A.S. P.

( डॉ. डी. एस. पै )

## संपादकीय

भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे की गृह पत्रिका 'किरणें' का छठवां संस्करण आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। यह विभाग मौसम से जुड़े वैज्ञानिक एवं तकनीकी कार्यों के अलावा हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार का दायित्व भी भली-भांति निभा रहा है। जिस गति से पुणे कार्यालय के कार्मिकों में हिंदी के प्रति उत्साह और साहित्य सृजन की 'किरणें' फैल रही है वहदिन दूर नहीं, जब हमारी गृह पत्रिका किरणें सूर्य की किरणों की भांति हर और अपना प्रकाश फैलाएगी और विभाग को देश को गौरवान्वित करेगी।

विभाग के अधिकारियों और कर्मचारियों द्वारा इसमें विभिन्न विषयों पर रचनाएँ लिखी गई हैं। इस अंक में साकारात्मक सोच के साथ-साथ एक बच्चे का सफर, तीन तलाक का फैसला, पापों का बोझ, योग, एवं माँ की ममता को दर्शाते हुए कई लेख रुपी किरणें हैं। जहां एक ओर वैज्ञानिक लेक जलवायु परिवर्तन और भूमंडलीय उष्णता में अत्यंत सरलता से जलवायु परिवर्तन से होने वाले मौसम में परिवर्तन के बारे में बताया गया है, वहीं दूसरी ओर एक कविता में संघर्ष और सफलता के बारे में बताया गया है। साथ ही मराठवाड़ा में हमेशा कम बारिश क्यों होती है और इससे जुड़ी समस्याओं में सुधार लाने के लिए हमारी भागीदारी के बारे में बताया गया है। विविध प्रकार के मोतियों को पिरोती हुई हमारी पत्रिका 'किरणें' आपके सम्मुख प्रस्तुत है। आपके बहुमूल्य सुझाव इस पत्रिका को और बेहतर बनाने में मील का पत्थर साबित होंगे।

हार्दिक शुभकामनाएँ,

## अनुक्रमणिका

लेख	पृष्ठ
<b>मौसमी किरणें</b>	
1. जलवायु परिवर्तन -श्रीमती आरती बंडगर, वैज्ञानिक 'सी'	1-4
2. मराठवाड़ा में हमेशा कम बारिश क्यों होती है ? - श्रीमती सुनीता भंडारी ,मौसम विज्ञानी 'ए'	5-8
<b>भाषायी किरणें</b>	
1. संविधान द्वारा निर्धारित राजभाषा नियम और अधिनियम - अपर्णा एम. खेडकर, कनिष्ठ अनुवादक	9-11
<b>सम सामयिक किरणें</b>	
2. जिंदगी के कुछ सूत्र - डा. अ. कु. श्रीवास्तव, वैज्ञानिक 'एफ'	12
3. "वसुधैव कुटुम्बकम् - पृथ्वी ग्रह मानवता का गृह" - लता श्रीधर मौसम विज्ञानी 'ए'	13
4. मेरा कार्यालय - सौ वृषाली विश्वास जोशी, सहायक	14-15
5. बगीचा - श्रीमती प्रज्ञा कुलकर्णी, सहायक	16-17
6. योग - अर्पण चौधरी, वैज्ञानिक सहायक	18-19
7. 'ताडोबा' - एक अद्भूत अनुभव - श्रीमती स्मिता अनिल नायर , मौसम विज्ञानी 'ए'	20-21
8. पहरेदार- श्री ओ.पी.चौधरी, मौसम विज्ञानी 'बी'	22-24
9. माँ की ममता - श्री वी.यू. देशपाण्डे, मौसम विज्ञानी 'बी'	25-26
10. विकास में तकनीक की भूमिका - वरदान है या अभिशाप - आँचल कुशवाहा, वैज्ञानिक सहायक	27-28
11.तीन तलाक़ का फैसला, संध्या रविकिरण, मौसम विज्ञानी 'बी'	29-31
<b>काव्य किरणें</b>	
1. जीवन संघर्ष - अचिंत्य जायसवाल, वैज्ञानिक सहायक	32
2. अशोक का हृदय परिवर्तन - मनोज कुमार, वैज्ञानिक सहायक	33
3. माँ - पूनम चौरसिया, वैज्ञानिक सहायक	34-35
4. संघर्ष - श्री अश्विनी कुमार प्रसाद, वैज्ञानिक सहायक	36
5. एक बच्चे का सफर - नेहा, वैज्ञानिक सहायक	37-39

6. मैं कहाँ जाऊं बस इतना बता दो मुझे - योगेन्द्र सिंह, वैज्ञानिक 40  
सहायक
7. चलते चलते - श्री हरिष देशमुख, सहायक 41
8. पापों का बोझ - सुश्री मोनिका संघवाहिया, वैज्ञानिक सहायक, 42-43



## जलवायु परिवर्तन और भूमंडलीय उष्णता

आरती भिमराव बंडगर,  
वैज्ञानिक - सी

आज समग्र विश्व में जलवायु परिवर्तन एक ज्वलंत समस्या है, जो एक साथ सभी जीव-जंतु, पशु-पक्षी को धीरे-धीरे विनाश की तरफ लेकर जा रही है। छोटी उम्र से ही हर किसी को इसके प्रति सचेत होना ही पड़ेगा। लोगों के लिए सबसे पहले यह जानना आवश्यक है कि जलवायु परिवर्तन है क्या और यह परिवर्तन कैसे हो रहा है। लेकिन उससे पहले जलवायु को जानना ज्यादा आवश्यक है। किसी स्थान के मौसम के दीर्घकालिक औसत को जलवायु कहा जाता है। जैसे कि एक स्थान के कम से कम तीस साल की औसतन वर्षा या औसतन तापमान इत्यादि। और इन सबके दीर्घकालिक औसत को अगर अध्ययन करके अगर कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तन देखा जाए तो यह कह सकते हैं कि जलवायु का परिवर्तन हुआ है। इस परिवर्तन के प्राकृतिक और मानवजनित दोनों ही कारण हैं, लेकिन प्राकृतिक के मुकाबले मानवजनित कारण से हुए परिवर्तन ज्यादा खतरनाक साबित हो रहे हैं। कहने को तो इंसान दुनिया का सबसे सभ्य प्राणी है, लेकिन जलवायु परिवर्तन में सबसे ज्यादा भूमिका इंसान का ही है। हमारे द्वारा निर्माण किये गए कारखाने, वाहन आदि ने हमारे जीवन सरल कर दिए हैं, परन्तु अगर इसका दीर्घकालीन परिणाम देखा जाए तो यही हमारे वातावरण को दूषित करने का कारण बने हुए हैं। कार्बन डाइऑक्साइड की सांद्रता जो 18वीं शताब्दी के मध्य तक 280 भाग प्रति दस लाख थी, अब बढ़ कर 400 भाग प्रति दस लाख से भी अधिक हो गयी है। यह हरित-गृह गैस हमारे वातावरण में रह जाते हैं और यह एक चादर की तरह काम करते हैं, जो धरती के ताप को बाहर निकलने नहीं देते। और इस तरह से पृथ्वी का तापमान बढ़ता ही जा रहा है, जिसे भूमंडलीय उष्णिकरण कहते हैं। तापमान बढ़ाने के साथ-साथ जो वनांचल वायुमंडल के कार्बन को कम करने का काम करते हैं, उन्हें भी हमने बिना सोचे-समझे काटना शुरू कर दिया है। और दुख की बात यह है कि हमारे इन कर्मों का फल हमारे साथ-साथ संसार के सभी जीव-जंतुओं को भी भुगतना पड़ रहा है।





वर्तमान शताब्दी में वैज्ञानिकों ने जलवायु परिवर्तन के ऊपर कई सारे अनुसंधान किए हैं। और इन अनुसंधानों से यह निश्चित हो चुका है कि पिछले 100 सालों में जलवायु में अनेक परिवर्तन आ चुके हैं। जलवायु परिवर्तन पर अंतर-सरकारी पैनल (आई. पी. सी. सी.) के भूमंडलीय उष्णता के ऊपर विशेष रिपोर्ट के अनुसार 2017 में पूर्व-औद्योगिक काल की तुलना में मानव-जनित कारणों से उष्णता लगभग 1 डिग्री से० तक बढ़ गयी है, जो कि प्रति दशक 0.2 डिग्री से० से वृद्धि हुई है। हर साल सर्वाधिक तापमान के नए-नए रिकॉर्ड बनते जा रहे हैं। इसी तरह की वृद्धि हमारे देश में भी देखने को मिली है। वैज्ञानिकों ने यह पाया है कि भारत में वर्ष 1901-2010 के दौरान माध्य तापमान 0.60 डिग्री से०/प्रति 100 वर्ष के हिसाब से वृद्धि हुई है। यह वृद्धि 1981-2010 के दौरान और अधिक है जब की यह 0.17 डिग्री से०/प्रतिदशक से वृद्धि हुई है। तापमान की वृद्धि के कई सारे परिणाम सामने आते हैं। धरती के साथ-साथ महासागर भी गरम हो रहे हैं और इससे अधिक पानी बादलों में वाष्पित हो रहा है। इसके कारण वर्षा में भी अनियमित बदलाव आया है। देखा जाता है कि कुछ-कुछ क्षेत्रों में स्वाभाविक से अधिक वर्षा हो रही है और अन्य कुछ क्षेत्रों में स्वाभाविक से कम वर्षा हो रही है। चरम मौसम वाली परिघटनाएं जैसे कि भारी वर्षा, ताप प्रवाह, सूखा, बाढ़ आदि की आवृत्ति और तीव्रता भी बढ़ने लगी है। समुद्र में आने वाले चक्रवाती तूफानों की संख्या में भी बदलाव आया है। तापमान बढ़ने के कारण धरती के ऊपर की बर्फ पिघलने लगी है। कई सारे ऐसे जगह हैं जो पहले बर्फ से ढका रहता था, जो आज बर्फ-मुक्त हो चुके हैं। बर्फ पिघलने के कारण समुद्र स्तर में भी वृद्धि हुई है। और हो सकता है कि आने वाले समय में तटीय अंचल के कुछ-कुछ इलाके और छोटे-छोटे द्वीप जलमग्न हो जाएँ। भूमंडलीय उष्णता के कारण हजार-हजार सालों से धरती में जमे हुए बर्फ भी पिघलने लग रहे हैं और साथ ही साथ उसके अन्दर जमे हुए कुछ नए-नए कीटाणु भी वायुमंडल में आ रहे हैं, जिनके कारण नई-नई बीमारियाँ भी फैलने का डर बढ़ रहा है।



एक सोचने वाली बात यह है जो लोग भूमंडलीय उष्णता को बढ़ाने में सबसे कम जिम्मेदार है, उनको ही इसकी ज्यादा कीमत चुकानी पड़ रही है। जैसे कि हमारे देश के गरीब किसान, जिनके पास न गाड़ी है, न कोई एयर कंडीशनर, लेकिन जलवायु परिवर्तन ने कभी अनावृष्टि के रूप में तो कभी अतिवृष्टि के रूप में इन लोगों पर आक्रमण किया है। आजकल देखा गया है कि हर कोई जलवायु परिवर्तन पर बातें करता है। हमें अक्सर सुनने को मिलता है कि पहले इतनी गर्मी नहीं होती थी, आजकल बहुत गर्मी होती है। लेकिन बहुत कम लोग हैं जिन्होंने यह जानने की कोशिश की है कि आखिर यह गर्मी क्यों बढ़ रही है और इसके लिए हम क्या कर सकते हैं। प्लास्टिक की थैलियाँ हम इस्तेमाल करते हैं बिना कुछ सोचे-समझे, लेकिन इसके कारण हमने वातावरण को दूषित करने में कितना योगदान दिया है यह सोचने वाले लोग वास्तव में बहुत कम हैं। जलवायु परिवर्तन एक या दो दिन में नहीं होता, यह एक धीमी गति से होता है, इसलिए हो सकता है कि इसके परिणाम बहुत लोगों के नज़र में नहीं आते। एक या दो डिग्री सेल्सियस तापमान बढ़ने पर भी हम इंसान इससे बचने के लिए कोई न कोई नया यन्त्र निकाल लेंगे, परन्तु पेड़-पौधे, फसल आदि इस गर्मी को नहीं सह पायेंगे। और बिना पेड़-पौधों के जीना हमारे लिए भी असंभव होगा। अभी भी हमारे पास समय है कि हम में से हर कोई अगर इस मामले में जागरूक हो जाएँ तो इस बदलते हुए जलवायु को काफी हद तक नियंत्रण कर लेंगे। परन्तु हर बात पर सरकार या किसी बड़े संगठन से कुछ करने की उम्मीद रखने से नहीं होगा। इसके लिए हमें खुद बाहर निकल कर आना पड़ेगा। तभी जाकर हम अपने आने वाली पीढ़ियों के लिए एक जीने लायक दुनिया बचा कर रख सकते हैं। एक मशहूर कहावत है- “हमें यह पृथ्वी हमारे पूर्वजों से उत्तराधिकार में नहीं मिला, यह हमें अपने बच्चों से उधार में मिला है।” आइये हम सब मिल कर इस पृथ्वी को वैसा ही बनाये रखे, जैसा यह हमें मिला था।

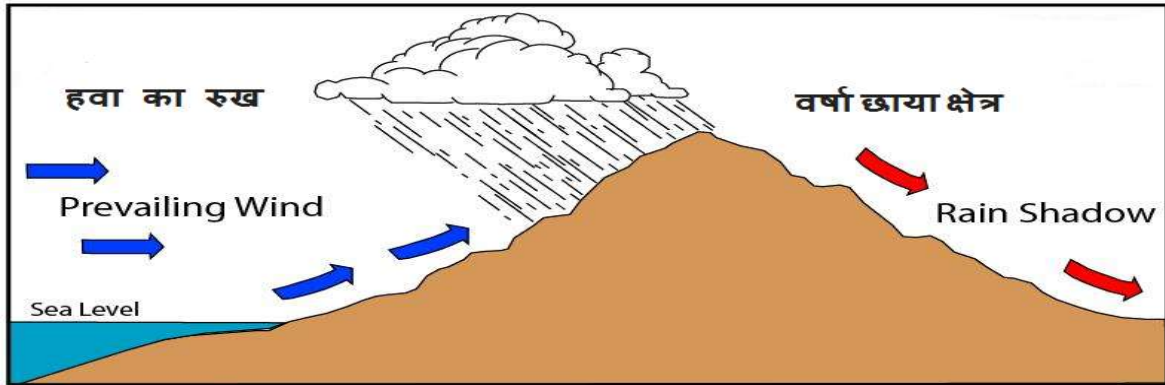
सन्दर्भ : **Observed Climate Variability and Change over the Indian Region, M.N. Rajeevan & Shailesh Nayak**

“देश-दुनिया तक हिंदी पहुंचाओ, पूरी दुनिया में पहचान बनाओ “

## मराठवाड़ा में हमेशा कम बारिश क्यों होती है ?

श्रीमती सुनीता भंडारी  
मौसम विज्ञानी 'ए'

दक्षिण-पश्चिम मानसून के कारण भारत में बारिश होती है। दक्षिण-पश्चिम मानसून हवाओं की गति उलटा 'S' की तरह होती है। यह हिंद महासागर से सीधे भारतीय मुख्य भूमि की ओर नहीं जाता है। यह केरल से देश में प्रवेश करती है, उत्तर-पूर्व दिशा की ओर घूमती है। जब यह महाराष्ट्र में पहुंचता है, तो सबसे पहले सह्याद्री पर्वत श्रृंखला इसका स्वागत करती है। जिससे, महाराष्ट्र के तटीय क्षेत्र - कोंकण में भारी वर्षा होती है। जब मानसून सह्याद्रियों को पार करता है, तो यह वर्षा छाया क्षेत्र में प्रवेश करता है, जो पश्चिमी महाराष्ट्र बेल्ट है। तटीय महाराष्ट्र की तुलना में, यहा कम बारिश होती है। इस के बाद मराठवाड़ा पहुंचने तक बारिश कम हो जाती है। ऐसे ही विदर्भ क्षेत्र आगे रहने के कारण मानसून के दौरान, वहा अधिक वर्षा होती है। बंगाल की खाड़ी से भी बादल पानी खींचते हैं और वह पानी महाराष्ट्र में विदर्भ को प्राप्त होता है।

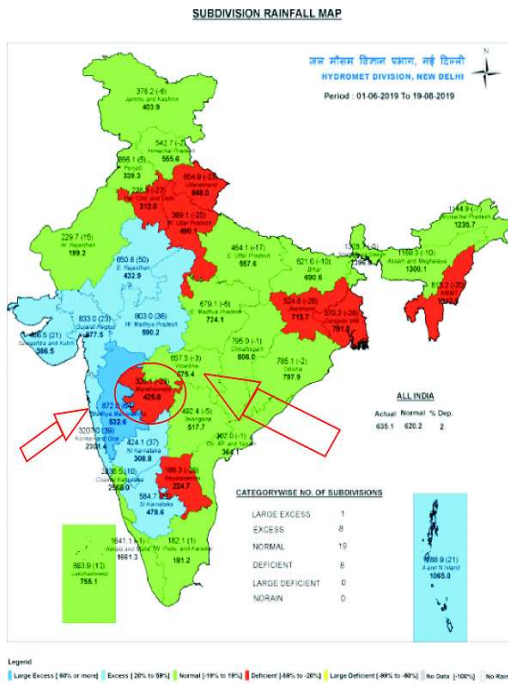


पश्चिमी विक्षोभ (WD) और मानसून गर्त (Monsoon Trough) जैसी अन्य मौसम प्रणालियां मराठवाड़ा तक नहीं पहुंचती हैं और इस प्रकार मराठवाड़ा में वर्षा हमेशा कम होती है। अतः मौसम विज्ञान के मद्देनजर, इस क्षेत्र का उसके भौगोलिक स्थान के कारण नुकसान हुआ है। इसकी भौगोलिक स्थिति और स्थलाकृति एक ही रही है, और एक ही रहेगी। एक समाज और राजनीति से उठ कर, हमें उस को समझना होगा और काम करना होगा जैसे कि मराठवाड़ा क्षेत्र में वन क्षेत्र को बढ़ावा देना चाहिए। वनक्षेत्र बढ़ाने से स्थानिक बाष्प बढ़ने में मदद मिलेगी और मानसून की बारिश पर उसका सकारात्मक प्रभाव दिखाई देगा।

भारतीय उष्णकटिबंधीय मौसम विज्ञान संस्थान और भारतीय विज्ञान संस्थान के एक अध्ययन के अनुसार, 1870 और 2015 के बीच इस क्षेत्र को 22 सूखे का सामना करना पड़ा, जिनमें

लगातार सूखे के पांच उदाहरण थे, जिनमें से हाल ही में 2014-15 और 2015-16 दो लगातार सूखे रहे। मराठवाड़ा में 2014 और 2015 में 40% बारिश की कमी थी, लगातार 3-4 साल की कमी शायद ही कभी होती है। सूक्ष्म सिंचाई, जो सतही सिंचाई की तुलना में अधिक जल-कुशल है और जो ड्रिप या स्प्रींकलर सिंचाई हो सकती है, इस क्षेत्र में यह अभी भी दुर्लभ है। बीड की कृषि भूमि के 6% से अधिक भूमि को सूक्ष्म सिंचाई की सुविधा है। जब इज़राइल 450 मिमी से कम बारिश के साथ प्रबंधन कर सकता है,

तो हम 650 मिमी के साथ प्रबंधन क्यों नहीं कर सकते हैं ? कई मायनों में सूखा मानव निर्मित है; यह कुप्रबंधन के कारण होता है।

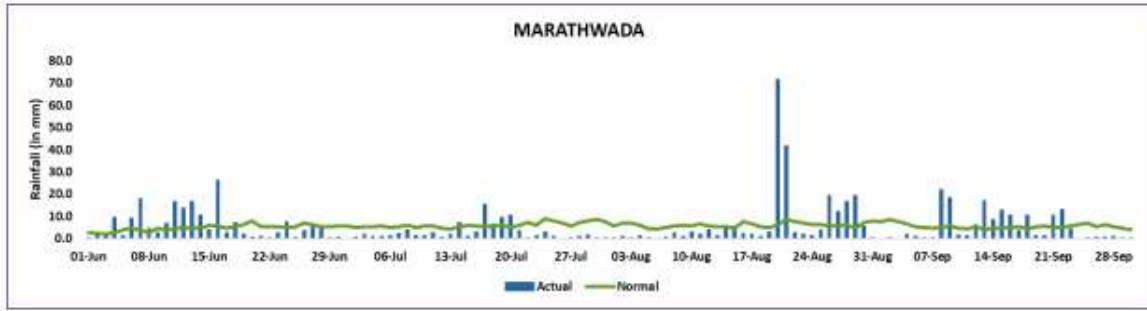


जब दक्षिण पश्चिमी मानसून जून के महीने में पश्चिमी तट पर पहुंचता है, तो महाराष्ट्र के पश्चिमी तट (2,500 मिमी से 3,000 मिमी) में भारी वर्षा होती है। पश्चिम से पूर्व की ओर वर्षा कम हो जाती है। जब यह मराठवाड़ा क्षेत्र में पहुंचता है, तो औसत वर्षा 750 मिमी हो जाती है। मराठवाड़ा एक भूभागीय क्षेत्र है। पूरे क्षेत्र में गोदावरी नदी और उसकी सहायक नदियाँ जैसे कि पूर्णा, शिवना, दुधना, वेदांग, सिंधफना, बिन्दुसार इस क्षेत्र की प्रमुख नदियाँ हैं। गोदावरी को छोड़कर, कोई अन्य

बारहमासी नदी नहीं है। गर्मियां आते ही ये नदियाँ बहुत कम पानी ले जाती हैं। गोदावरी बेसिन में प्रमुख बांध अहमदनगर में भंडारा, औरंगाबाद में जयकवाड़ी स्टेज 1, जालना में ऊपरी दुधना और परभणी में लोअर दुधना, बीड में सिंधफाना और बेंडसुर, लातूर में मजीरा, औरंगाबाद में उझानी, औरंगाबाद में उज्जानी, आदि सभी जलाशयों में बारिश के मौसम में पानी मिलता है। भूमिगत जल की निकासी अंततः पारिस्थितिक आपदा का कारण बन रहे हैं। मुख्य रूप से, किसान उथले भूजल का उपयोग कर रहे थे। 2012-13 में वर्षा के पानी की तीव्र कमी से, अधिकांश कुएँ सूख गए। कई चेक डैम बेकार हो गए। मंजारा, मंजुलगो, टेरेना, पुराण के जलाशयों का लाइव स्टोरेज इस समय में शून्य स्तर पर गया है।

मराठवाड़ा में औसतन हर साल 500 मिमी से 600 मिमी बारिश होती है। यह बहुत कम बारिश नहीं है। राजस्थान में 50-60 मिमी वर्षा होती है। लेकिन भारत के वाटरमैन राजेंद्र सिंह पारंपरिक भंडारण विधियों और भूजल स्रोतों की भरपाई करके पानी का संरक्षण कर रहे हैं। 1940 के निज़ाम के शासनकाल में मराठवाड़ा का पेड़ कवर भी लगभग 30% से काफी कम हो

गया है जो अब 5% से कम है। बोरवेल संस्कृति ने भूजल जलवाही स्तरका उपयोग किया है जो फिर से भरने में सैकड़ों साल लगते हैं। विशेषज्ञों ने कहा कि जलयुक्त शिवार योजना के जरिए भूजल को फिर से भरने पर मौजूदा सरकार का ध्यान इस क्षेत्र के लिए मददगार होगा। वास्तविक वर्षा और सामान्य वर्षा 2017 का वितरण ग्राफ से मराठवाड़ा क्षेत्र की अनावृष्टी की गंभीरता को जान सकते हैं:



**Figure : Marathwada - Rainfall Distribution - SW Monsoon 2017**

मराठवाड़ा में 70 चीनी मिलें हैं। गन्ने की खेती के लिए मराठवाड़ा के लिए आवश्यक कुल पानी 4,300 मिलियन घन मीटर है। यह आवश्यकता गोदावरी के सबसे बड़े बांध की भंडारण क्षमता से दोगुनी है। सिर्फ गन्ने की पेराई के लिए 17 मिलियन क्यूबिक मीटर पानी की आवश्यकता होती है, जो अगले मानसून तक 15.85 लाख लोगों को पीने का पानी उपलब्ध कराने के लिए पर्याप्त है। महाराष्ट्र में जल प्रबंधन की कोई उचित नीति नहीं है। स्थिति से निपटने के लिए कई उपाय किए जाने की आवश्यकता है।

वर्षा जल संचयन और जल संरक्षण के महत्व को जानने के बाद महाराष्ट्र के हिवरे बजार के ग्रामीणों ने 52 मिट्टी के बांध, 32 पत्थर के बांध और नौ चेक बांधों का निर्माण किया। भूजल स्तर बढ़ने के साथ, गाँव समृद्ध होने लगा। आज भी, हिवरे बजार ने एक भी पानी के टैंकर को नहीं बुलाया है। इसी तरह पुलकोटी गाव ने भी सूखे के प्रकोप से बचने में कामयाब होकर सभी के लिए एक मिसाल स्थापित की है। आज, मान तालुका का जल स्तर वास्तव में डेढ़ मीटर बढ़ा है।

हाल ही में एक अच्छी खबर है, राज्य मंत्रिमंडल ने 30 जुलाई को थमंगंगा-पिंजल नदी-जोड़ने की परियोजना को लागू करने पर सहमति व्यक्त की है।

इन तथ्यों की जानकारी हमको स्थानिक लोगों के साथ बांटनी होगी और पानी फौंडेशन जैसे स्वयंसेवी संस्था के साथ जुड़कर हमारा सहभाग बढ़ाना समय की मांग है। 13 अगस्त को खूशखबरी आयी है की जायकवाडी बांध अब भर गया है जिससे पानी की समस्या

का हल निकला है। फिर भी हमको मिली हुई बारीश का भंडारण करने के लिए वृक्षों के क्षेत्र को तेजीसे बढ़ाना होगा जिससे भविष्य कि अनावृष्टि में सुधार हो सके ।

“हर कण में हैं हिंदी बसी  
मेरी माँ की इसमें बोली बसी  
मेरी मान हैं हिंदी  
मेरी शान है हिंदी“

-----

## संविधान द्वारा निर्धारित राजभाषा नियम और अधिनियम

अपर्णा एम.खेडकर,

कनिष्ठ अनुवादक

सभी सरकारी कार्मिकों को राजभाषा हिंदी के प्रयोग के संबंध में सरकार और संविधान द्वारा निर्धारित किए गए राजभाषा नियमों की जानकारी दिया जाना बहुत महत्वपूर्ण है ताकि कार्यालय में सभी इन नियमों से भली-भाँति परिचित हो सकें और लक्ष्य प्राप्त करने की दिशा में अधिक से अधिक प्रयास कर सकें।

**राजभाषा नियम क्या हैं:** हमारे देश को आजादी मिलने के उपरांत देश के संविधान निर्माताओं ने 14 सितम्बर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया। इसी संबंध में हिंदी के प्रयोग के लिए राजभाषा अधिनियम, 1963 पारित किया गया। राजभाषा अधिनियम 1963 को लागू करने के लिए सरकार ने राजभाषा अधिनियम 1976 (यथा संशोधित 1987) बनाए जिसे राजभाषा नियम 1976 कहा जाता है।

### राजभाषा हिंदी के प्रयोग से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण नियम

#### 1. हिंदी के ज्ञान के आधार पर देश का क्षेत्र : वार बटवारा-

देश में हिंदी ज्ञान के आधार पर देश को तीन क्षेत्रों में विभाजित किया गया है और उसी के आधार पर हिंदी में किए जाने वाले कार्यों का प्रतिशत निर्धारित किया गया है।

- "क" क्षेत्र - बिहार, झारखण्ड, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान और उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड राज्य और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह तथा दिल्ली के संघ राज्य क्षेत्र।
- "ख क्षेत्र" - गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य और चंडीगढ़, दमन एवं दीव तथा दादरा व नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र।
- "ग क्षेत्र" - उपर्युक्त में निर्दिष्ट राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से भिन्न राज्य तथा संघ राज्य क्षेत्र।

#### 2. राजभाषा अधिनियम (3)3 की धारा 1963

क) ऐसे सभी आदेश, निर्णय या अनुदेश जो विभागीय प्रयोग के लिए हों और जो स्थायी प्रकार के हों;

ख) ऐसे सभी आदेश, अनुदेश, पत्र, टेंडर, संविदाएं, करार, लाइसेंस, परमिट, प्रेस विज्ञापितियां, संकल्प, अनुज्ञापत्र, निविदा आदि जो सरकारी कर्मचारियों के समूह अथवा समूहों के संबंध में हों या उनके लिए हों;

ग) ऐसे सभी परिपत्र जो विभागीय प्रयोग के लिए हों या सरकारी कर्मचारियों के लिए हों ;प्रेस तथा अन्य कार्यालय के अनुदेश हिन्दी और अंग्रेजी में अनिवार्य हैं।

**उपरोक्त सभी प्रयोजनों के लिए हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं का प्रयोग सुनिश्चित किया जाए।**

3. राजभाषा नीति के अनुसार संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी तथा अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतरराष्ट्रीय रूप होगा।
4. मैनुअल, संहिताएं, प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, लेखन सामग्री आदि हिन्दी और अंग्रेजी में द्विभाषिक रूप में मुद्रित या साइक्लोस्टाइल किया जाए।
5. कार्यालय में प्रयोग किए जाने वाले रजिस्ट्रों के प्रारूप और शीर्षक हिन्दी और अंग्रेजी में होंगे।
6. कार्यालय में प्रयोग के लिए सभी नामपट्ट, सूचना पट्ट, पत्रशीर्ष और लिफाफों उत्कीर्ण लेख तथा लेखन सामग्री की अन्य मर्दें हिन्दी और अंग्रेजी में लिखी जाएंगी, मुद्रित या उत्कीर्ण होंगी।
7. कार्यालय नाम का साइन बोर्ड तीनों भाषाओं अर्थात् राज्य की प्रादेशिक भाषा, राजभाषा हिंदी और अंग्रेजी में लिखा होना अनिवार्य है
8. फाइलों तथा रजिस्ट्रों के विषय द्विभाषी रूप में लिखे जाएं जिसमें हिंदी ऊपर तथा अंग्रेजी नीचे हो तथा हिंदी के अक्षर अंग्रेजी अक्षरों से छोटे न हों।
9. कम्प्यूटर पर हिंदी के लिए केवल यूनिकोड एनकोडिंग का प्रयोग किया जाए।
10. पत्र प्राप्त एवं प्रेषण रजिस्ट्रों में आँकड़े ठीक से रखे जाएं ताकि संसदीय राजभाषा समिति या अन्य किसी राजभाषायी निरीक्षण के दौरान मांगे जाने पर प्रस्तुत किए जा सकें।
11. ईमेल को प्रेषित पत्रों में ही सम्मिलित किया जाए तथा अधिक से अधिक हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित किया जाए।
12. कार्यालय में प्राप्त होने वाले हिंदी में हस्ताक्षरित पत्रों को हिंदी पत्र माना जाए। हिंदी में प्राप्त सभी पत्रों का जवाब हिंदी में देना आवश्यक है। अंग्रेजी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाए।



13. 'क' तथा 'ख' क्षेत्रों को भेजे जाने वाले पत्रों के लिफाफों पर पते हिंदी में लिखे जाएं।
14. प्रयोग में लाई जाने वाली सभी मोहरें द्विभाषी हों।
15. सभी नामपट्ट द्विभाषी हों ।

### जाँच बिंदु

- प्रेषण अनुभाग को जांच बिंदु बनाया जाए और 'क' तथा 'ख' क्षेत्रों को जाने वाले पत्रों के लिफाफों पर पते देवनागरी लिपि में ही लिखे जाएं ।
- धारा (3)3में उल्लिखित सभी दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले अधिकारियों की यह जिम्मेदारी है कि वे यह सुनिश्चित करें कि मसौदे पर तब तक हस्ताक्षर न किए जाएं जब तक वांछित कागजात द्विभाषी में न हो । (अंग्रेजी-हिंदी)
- सभी अनुभाग प्रमुख किसी भी फाइल पर हस्ताक्षर करते समय यह ध्यान रखें कि नियमों का पालन हो रहा है या नहीं।

### तिमाही प्रगति रिपोर्ट

सभी सरकारी कार्यालयों को हर तिमाही कि समाप्ति उपरांत अर्थात 31 मार्च, 30 जून, 30 सितम्बर और 31 दिसम्बर के बाद उस तिमाही के दौरान कार्यालय में हिंदी के प्रगामी प्रयोग संबंधी तिमाही रिपोर्ट प्रस्तुत करनी अनिवार्य है । इस रिपोर्ट में कार्यालय में हुए हिंदी पत्राचार, टिप्पण लेखन, प्रशिक्षण इत्यादि का लेखा निर्धारित प्रपत्र में प्रस्तुत करना होता है।

### वार्षिक कार्यक्रम

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा प्रत्येक वर्ष एक वार्षिक कार्यक्रम जारी किया जाता है, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों के सरकारी कार्यालयों द्वारा हिन्दी में किए जाने वाले तमाम कार्यों के लिए लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं। सभी कार्यालयों को उसका अनुपालन करना अनिवार्य है।

सभी समूह प्रमुखों एवं अनुभाग अधिकारियों से अनुरोध है कि कृपया अपने अनुभाग एवं समूह से तिमाही रिपोर्ट में दिए जाने वाले आंकड़ों के प्रति विशेष रूप से सजग रहे, कार्यालय प्रमुख को इस रिपोर्ट के साथ यह प्रमाणपत्र प्रस्तुत करना होता है कि इस तिमाही रिपोर्ट में दिए गए सभी आंकड़ें सही हैं । साथ ही इन आंकड़ों के आधार पर ही संसदीय समिति को प्रस्तुत की जाने वाली प्रश्नावली तैयार की जाती है ।

## जिंदगी के कुछ सूत्र

डा. अ.कु. श्रीवास्तव  
वैज्ञानिक 'एफ'

1. सुबह जागने पर हमारे पास दो पर्याय होते हैं या तो हम पुनसो जायें और सपने देखे अथवा जागकर उन सपनोंको हकीकत में बदलने का प्रयत्न करें।
2. जब आप बहुत खश हों तो वादा न करें।  
जब आप दुखी हों तो प्रतिउत्तर न दें।  
जब आप क्रोध में हों तो निर्णय न लें।  
दो बार सोचे, पुनकार्य करे। :
3. समय नदी की लहर की तरह है। हम एक ही लहर को दो बार छू नहीं सकते क्योंकि जो लहर चली गयी, दुबारा नहीं आयेगी। इसलिए जीवन के हर पल का (समय) आनंद लें।
4. किसी को अपने बारेमें एक सीमा से अधिक सफाई न दें क्योंकि जो आपको चाहता है, उसे इसकी जरूरत नहीं है और जो आपको नहीं चाहता है, वह आपकी किसी सफाई से कभी संतुष्ट नहीं होगा।
5. जब हम कहना शुरू करते हैं कि हम व्यस्त हैं तो यकीन मानिये आप कभी भी समय नहीं निकाल पायेंगे। जब हम कहते हैं कि हमारे पास किसी के लिए समय नहीं है तो शायद हमारे पास कभी भी किसी के लिए समय नहीं होगा। जब हम यह कहते हैं कि हम यह कल करेंगे, तो यकीनन हमारा कल कभी नहीं आयेगा।

-----

## “वसुधैव कुटुम्बकम् – पृथ्वी ग्रह मानवता का गृह”

लता श्रीधर

मौसम विज्ञानी 'ए'

इतिहास में पहली बार मानव प्रजाति का भविष्य अनिश्चितता के दौर से गुजर रहा है। मानव समाज ने धरती को अब तक बहुत घायल कर दिया है। यही स्थिति बनी रही तो इस सृष्टि से मानव प्रजाति और उसकी संस्कृति निश्चित ही विलुप्त हो जाएगी। पिछले 200 वर्षों से हमने जीवांश ईंधन का इस कदर दोहन किया कि ऊर्जा प्रदान करने वाले इस द्रव्य के अकूत भंडार खोखले हो चुके हैं। अब प्रकृतिक में संतुलन स्थापित करने हेतु एक मात्र विकल्प यह है कि हमने इस धरती को जो घाव दिये हैं, उनकी भरपाई कर पृथ्वी की आरोग्यता को बढ़ाया जाए और सृष्टि के इस ग्रह को चिरायु बनाए रखने के लिए हर सम्भव प्रयास किए जाएं। ऐसा करने के लिए मानव समाज में एकता का संचार और भविष्य के प्रति एक सकारात्मक आस बनाए रखना परम आवश्यक है। देश का नागरिक होने के नाते हमारा कर्तव्य है कि हम अपने प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण कर इस धरती की रक्षा करें। धरती हमारी मां है और उसकी रक्षा में ही हम सबकी भलाई और हमारा भविष्य सुरक्षित है।

हमारे लिए धरती पर सभी मानव एक समान हैं। इसलिए हम सम्पूर्ण धरती को एक परिवार (वसुधैवकुटुम्बकम्) मानते हैं। हम इस अखिल विश्व-परिवार के नागरिक हैं और अपने ग्रह यानी इस धरती को बचाना हम सभी का कर्तव्य और धर्म है। यह सार्वभौमिक सत्य है कि पृथ्वी है तो मानव है। आज लगातार अपभोगवादी संस्कृति और अति स्वार्थपूर्ण कॉर्पोरेट जगत को अपने नजरिये को बदलने की आवश्यकता है। हम सभी को मिलकर अपने स्वार्थ और लालच को ईमानदारी और जिम्मेदारी में बदलना होगा, तभी मानवता रूपी बीजों को संरक्षण प्रदान किया जा सकेगा।

जल, वायु, मिट्टी, बीज और भोजन पर जनसामान्य का अधिकार है। जलवायु संकट, भोजन संकट और जल संकट का एक दूसरे से घनिष्ठ सम्बंध है तथा इन संकटों का समाधान इन तत्वों संरक्षण में ही अंतर्निहित है। यह पृथ्वी चिरायु रहेगी तो मनुष्य भविष्य में इस भूमि की उर्वरा-शक्ति तथा विविध फसलों के बीजों की अंकुरण-शक्ति से अपने समुदाय का पालन-पोषण कर सकेगा। हां, मानव नामक इस प्राणी के संरक्षण के लिए इस प्रकृति में सम्पूर्ण जैव विविधता का सुरक्षित रहना अति आवश्यक है।



-----

## मेरा कार्यालय

सौ वृषाली विश्वास जोशी,

सहायक

आज मैं मेरे कार्यालय के प्रति कुछ बातें बताना चाहती हूँ। मुझे कार्यालय में जुड़कर सत्ताईस साल पूरे हो गये। पीछे मुड़कर देखूँ तो बहुत सारी यादें, अनुभव, तजुर्बा मेरे पास है। मेरा कार्यालय मेरे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यहाँ जुड़ने के बाद जो वरिष्ठ कर्मचारी थे वो सभी सेवानिवृत्त हो गये। लेकिन उन्होंने मार्गदर्शन किया है। कार्यालय के काम के प्रति और मेरे निजी/व्यक्तिगत मामलों में भी उन्होंने मुझे मार्गदर्शन किया है। कभी भी कुछ बातें बताना है तो दोपहर के भोजन के समय एक दूसरे के साथ घर की और कार्यालय की बातें शेअर करते हैं। उनके अनुभवों से हमें भी सिखने को मिलता है। मुझे पैसों का मैनेजमेंट करना याने पैसे कैसे बचाना कहाँ निवेश करना यह सब कार्यालय में सिखने को मिला।

मैं कार्यालय से इतना घुल-मिल गयी हूँ कि घरेलु कार्यक्रम का आयोजन करते समय कार्यालय को कब छुट्टी है या अभी छुट्टी मिलने की संभावना है या नहीं ये सोचकर ही कार्यक्रमों का नियोजन करती हूँ। मैं तो यहाँ तक कहती हूँ की जब तबीयत ठीक नहीं होती है तो भी पहले कार्यालय के काम के बारे में ही सोचती हूँ, आज छुट्टी लेना जरूरी है क्या? कुछ जरूरी और तुरंत काम है तो मैं घर में बैठ ही नहीं सकती। कार्यालय का अपनापन मुझे कार्यालय की ओर खींच लाता है।

कार्यालय मेरे जीवन का अहम हिस्सा बन गया है। मैं कार्यालय के सभी सहकर्मियों की आभारी हूँ जिन्होंने मुझे मदद की है। कभी कभी कार्यालय में काम करते करते किसी सहकर्मी से कुछ बातों में अनबन होती है मैं उसे लेकर नहीं बैठती हूँ, जल्दी भूलकर बात करना ही मैंने हमेशा बेहतर समझा है। कार्यालय को घर मानकर मैंने सबसे संपर्क रखके सबसे अच्छा रिश्ता और संबंध रखना जरूरी समझा है। हर दिन आठ घंटे हम एक साथ बिताते हैं। दिन का अधिकतम समय हम यहाँ कार्यालय में बिताते हैं। मुझे हमेशा लगता है कि पिछले जन्म का रिश्ता होगा इसलिए हमसब यहाँ एकसाथ हैं। मेरे सुख दुःख के सारे साथी हैं।

कार्यालय में महिला दिवस, हिंदी पखवाड़ा, शिवजंयती तथा अम्बेडकर जयंती जैसे कार्यक्रमों में हिस्सा लेने से मुझे ताज़गी महसूस होती है कभी सोचती हूँ कि अगर नोकरी

नहीं करती तो यह सब खोती थी । नोकरी करने से जीवन में एक अच्छी दिनचर्या, अनुशासन आ गया है । समय पर सब काम करने की अच्छी आदत पड़ गई है । नौकरी करने से मुझे आत्मविश्वास मिला है।

जब मैं हर दिन कार्यालय के गेट से अंदर आती हूँ तो भगवान को धन्यवाद देती हूँ मुझे इस कार्यालय में नोकरी मिलने के कारण मैंने मेरे जीवन में बहुत कुछ पाया है । जीवन में हर एक चरण में मेरी नौकरी मेरे साथ है । जब हम अपने घर जाते हैं तो हमें बहुत ही रिलैक्स और सुरक्षित लगता है । जब मैं रोज कार्यालय में आती हूँ तो मुझे गेट से अंदर आने के बाद सुरक्षित होने का एहसास होता है । मेरी भगवान से प्रार्थना है कि मुझे सेवानिवृत्ति तक कार्यालय में काम करने का अवसर प्रदान करें ।

-----

## बगीचा

प्रज्ञा कुलकर्णी  
सहायक

बगीचा शब्द सुनते ही रंग-बेरंगी फूल पौधे और उसकी खुशबु यह सारी यादें तरोताजा होती हैं और सामने सारा बचपन उभर आता है मन उस मखमली यादों में तरने लगता है। मन प्रफुलित हो उठता है। एक फिल्म की तरह बगीचे के सारे चित्र मेरे आँखों सामने चलने लगते हैं।

मेरी आँखों के सामने स्कूल में देशी गुलाब का बगीचा, साथ ही हमारे घर के सामने का बगीचा याद आ रहा है। मुझे स्पष्ट याद है कि हमारे घर में गुलकंद गुलाब था। वह गुलाब का रंग निर्मल पत्ते और सुगंध आहा: अब भी मैं उस सुगंध को महसूस कर रही हूँ। मेरे पिताजी को बागवानी करना बहुत पसंद था। मेरा बचपन कोंकण का कोंकण की भुमी मूल रूप से उपजाऊ हैं हमारे पिताजी बहुत मेहनत करते थे। हमे घर में सब्जी याने टमाटर,धनिया ,लाल कद्दु ,दूध कद्दू,खीरे और पत्तेदार सब्जिया भी बहुत थी। बचपन की एक और याद यह है कि जब ककड़ी कोमल होती है, तो उसका फूल भी नहीं झड़ा हो ऐसी कोमल ककड़ी खाने का कुछ मज़ा ही कुछ और है, और अमृत झांडो पर चढ़कर कच्चे पक्के अमृत खाना,चीकू के पेड, कोकण फलों का राजा आम उसकी बात ही निराली कैरी हापुस आम खाना कहाँ वह बचपन के आम अब मिलते हैं पावडर वाले आम बस उसी की याद करके सूखद सपनों में खोजाती हूँ। अब बाजार जाती रुखी सब्जियों को देखती हूँ मन उदास हो जाता है परंतु मजबुरी बचपन के यादों के साथ खरीद हूँ।

मेरे पिताजी (पुणे) में गैलरी में उपलब्ध जगह में फूल लगा कर उनका आनंद लेते थे। पिताजी से प्राप्त यह बागवानी का शोक मुझमें भी आ गया मैं ने अपने घर के सभी गमलों में फूलों के पौधे लगाए उसे अच्छी देखभाल करती थी। साल में उस गमलें की मिट्टी निकाल कर उसे सुखाने और बाद में उसमें उर्वरक डाल कर पुनः उन्हे गमलों में डालना मानों उन्हे दुबारा सजा कर तैयर करना। खिले हुए फुलों कर देखकर मेरा मन प्रफुलित हो जाता था। उन्हे शब्दों में व्यक्त करना नामुमकीन हैं। चूँकी मेरा बेटा यह सब बचपन से देख रहा हैं।अब वह भी गमलों की देखभाल करता हैं। वह अब गैलरी में काँकपिट,गोबर और फिशटैंक की सफाई में बगीचे काम को उसने संभाला हैं।

उस फुलों की गॅलरी में बैठकर पेपर पढ़ना,किताबें पढ़ाना,गाने सुनना उसी के साथ एक प्याली गरम गरम चाय का आनंद लेना,मानों सारी दुनिया को उस समय भुल जाती हूँ।

उसी बगीचे शौक ने मुझे दापोली जो कोकण में वहाँ जाना मजबुर कर दिया वहाँ एक छोटा सा घर बनाकर उस ऊपजाऊ भूमि में अगल बगल में आम, नारियल, कटहल, जामुन, चिकु और बहुत सारेफुलों के पौधे लगाए हैं सब्जियाँ लगाई हैं,भूमि ढलान पर पौधे लगाए हैं। जगह जगह पर स्प्रिंकर, ड्रिप इरिगेशन सब कुछ लगाया है। जब वहाँ जाती तो सारी थकान भुल जाती हूँ। उस खिलते हुए फुलों को देखती रहती हूँ दापोली से जब पुणे आने के लिए निकली हूँ सोच ही की सुबह जल्दी निकलु परंतु कुछ कुछ काम निकाला कर वही रुक जाती हूँ मानलो मन कहता है और थोडी देर जहाँ तक संभव देरी करती हूँ। मेरे पाँव वहाँ से निकल नहीं पाते। दिल पर पत्थर रख कर निकती हूँ। गाड़ी में बैठकर पिछे देखती हूँ सारी यादे धुंदली दिखने लगती है।

-----



## योग

अर्पण चौधरी,  
वैज्ञानिक सहायक

महर्षि पतंजलि ने योग की परिभाषा कुछ इस प्रकार दी है

**“योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः”**

योग चित्त की वृत्तियों का निरोध है ।

अर्थात् बहिर्मुखी वृत्तियों को अन्तर्मुखी बना लेना तथा चित्त (मन) को उसके मूल स्वभाव में अवस्थित करना ही योग है । सरल भाषा में कहें योग आत्मा का परमात्मा से मिलन है । वह परमात्मा-तत्त्व जो हम सभी में विद्यमान है, उससे साक्षात्कार, स्वयं की प्रकृति से साक्षात्कार ही योग है ।

योग प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति का अंग रहा है । सर्वप्रथम हमारे ऋषि-मुनियों ने ही योग-पद्धति को अपने जीवन में अपनाया और इस अमूल्य ज्ञान को जन-जन तक पहुंचाया । उन्होंने ही जन-साधारण को सिखाया कि योग द्वारा ही एक आदर्श जीवन जिया जा सकता है । इसी दिशा में महर्षि पतंजलि, जिन्हें योग का जनक भी कहा जाता है, का योगदान अतुलनीय है। उन्होंने ही योग का स्पष्ट प्रारूप दुनिया के सामने रखा ।

महर्षि पतंजलि के अनुसार योग के आठ अंग हैं या फिर ये कहें कि आठ चरण हैं । यम,नियम,आसन,प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा व समाधि । प्रथम चार अंग बहिर्मुखी साधना अर्थात् बाह्य शरीर को साधने की कला है । अंतिम तीन अंतरंग साधना अर्थात् इन्द्रियों को साधने की कला है । प्रत्याहार इनके बीच की कड़ी है ।

चरण-दर-चरण, हम जैसे-जैसे आगे बढ़ते हैं, वैसे-वैसे हम मन की गहराइयों में उतरने लगते हैं । धीरे-धीरे मन की सभी परतें खुलने लगती हैं । हम स्वयं को जानने के और निकट आने लगते हैं । प्रकृति से इस ब्रह्माण्ड से स्वयं का जुड़ाव महसूस करने लगते हैं । योग-साधना जब परिपक्व हो जाती है तब हमें उस परमानन्द की अनुभूति होती है, उस ब्रह्म की अनुभूति होती है, जिसे वेदों ने “नेति-नेति” कहकर सम्बोधित किया है । हम देख पाते हैं कि सम्पूर्ण-ब्रह्माण्ड उस परम-शक्ति के द्वारा ही चलायमान है । कर्ता तो वह है, हम तो केवल द्रष्टा हैं ।

योग अध्यात्मिक पक्ष के साथ-साथ मानव जीवन के अन्य सभी पक्षों की उन्नति में सहायक है। एक योगी का मन, बुद्धि और आत्मा तीनों एक ही दिशा में कार्यरत होती है। समग्र शक्ति की एकाग्रता सर्वोच्च कार्यकुशलता प्रदान करती है। परिणामस्वरूप, उसे कार्य सिद्धि सरलता से प्राप्त हो जाती है।

जब भीतरी संतुलन स्थापित होता है, तब बाह्य लाभ भी प्रत्यक्ष होने लगते हैं। एक योगी का व्यवहार संतुलित वाणी मधुर व क्रोध नियंत्रित रहता है। वह मिताहारी, मितभाषी, निःस्वार्थ व निर्भीक स्वभाव का होता है। वह प्रसन्न चित्त रहता है और उसके मुखमंडल पर एक तेज बना रहता है। वह हर क्षण ऊर्जा से युक्त रहता है।

योग का प्रचार-प्रसार निरंतर बढ़ रहा है। पश्चिमी देशों में भी योग खूब लोकप्रिय हो रहा है। योग की प्रामाणिकता सिद्ध करने के लिए कई वैज्ञानिक परीक्षण भी हुए जिनमें वह खरा उतरा है। आज चिकित्सक भी रोगों से मुक्ति पाने हेतु औषधि के साथ योग करने की सलाह दे रहे हैं।

योग को जीवन में अपनाने की जरूरत आज बढ़ चुकी है क्योंकि चारों तरफ रोग, तनाव, द्वेष व अशान्ति का वातावरण लगातार बढ़ रहा है। मानव आज असंतुलित जीवन जी रहा है जिसके कारण शरीर व मन की व्याधियां उत्पन्न हो रही हैं। समय के साथ-साथ मनुष्य की प्रवृत्तियां भी बहिर्मुखी होती जा रही हैं। वह स्वयं से कटता जा रहा है और बाहरी चकाचौंध की ओर भाग रहा है। भीतरी सुन्दरता को छोड़ बाहरी सुंदरता को बढ़ाने पर जोर दे रहा है। जो आनंद व शान्ति उसके अन्दर निहित हैं, उसे वह बाहर ढूँढ़ रहा है। परंतु उसे निराशा ही हाथ लग रही है। निराश व अशान्त मन ही रोगों की जड़ है।

इस स्थिति में योग के द्वारा परिवर्तन लाया जा सकता है। योग का जीवन में आचरण हमें प्रसन्न चित्त, स्वस्थ व ऊर्जावान बनाता है। तन और मन की सुंदरता बढ़ाता है। योग हमें स्वस्थ जीवनशैली जीना सिखाता है। यह मानव-जीवन बड़ा दुर्लभ है। इसे व्यर्थ ही नहीं गंवाया जा सकता। इस जीवन की सार्थकता तो जन-कल्याण व मानव सेवा से है। मानव-सेवा ईश्वर की सेवा का दूसरा रूप है। यह सेवा भी तो स्वस्थ शरीर व मन द्वारा ही की जा सकती है। तो आइए, हम सब योग की शरण में चले और उस आनन्द की अनुभूति करें जिसे शब्दों में नहीं बांधा जा सकता।

-x-x-x-

## ताडोबा - एक अद्भूत अनुभव

श्रीमती स्मिता अनिल नायर,  
मौसम विज्ञानी - 'ए'

2018 की गर्मियों की छुट्टियों में कुछ रोमांचक यात्रा का जिक्र हुआ। जंगल सफारी का सुझाव आया और चंद्रपुर से 45 कि.मी. की दूरी पर स्थित ताडोबा अंधारी बाघ अभ्यारण्य जाने का निर्णय हुआ। एक तरफ तपतपाती धूप व लू तो दूसरी ओर बाघों का अपनी प्राकृतिक विरासत में देखने की उत्सुकता।

तुरंत गूगल और इंटरनेट की सहायता से आवास और घूमने की व्यवस्था की गई। फॉरेस्ट डिपार्टमेंट कारपोरेशन ऑफ महाराष्ट्र का गेस्ट हाउस बुक किया गया।

पहले दिन के लिए मोहाली गेट जो ताडोबा अभ्यारण्य में प्रवेश करने का सबसे पुराना प्रवेश द्वार है, उस द्वार से सुबह व शाम का बुकिंग किया गया। इस प्रवेश द्वार से हम जंगल के कोर भागों में जीप सफारी (ओपन जीप) कर सकते हैं। इस दौरान तैतिया बाघ का पूरा परिसर घुमाया गया। घने टीस और बास के पेड़ से भरा यह घना जंगल बाघों के लिए ही बना था। इस सफर के दौरान बहुत से बंदर, चित्तीदार हिरण, काला सांबर हिरण, भारतीय तेंदू, जंगली बिल्ली, भोंकने वाला हिरण, चीतल और चौंसिंगे के साथ सागौन, बांस, बीजा, तेंदू, जामून, महुआ और साल जैसे पेड़ भी देखने को मिले। मजे की बात तो यह है कि एक पेड़ भूत पेड़ (Ghost Tree) के नाम से भी जाना जाता है। गाइड ने बताया कि यह पेड़ रंग बदलता है इस कारण इसे भूत पेड़ कहा जाता है। कड़कडाती धूप में पसीने छुट रहे थे, प्यास लग रही थी, थकान महसूस हो रहा था पर बाघों का दूर-दूर तक कोई नामोनिशान नहीं था। धीरे-धीरे निराशा छा रही थी ऐसा लग रहा था मानों बाघों का दिखना लगभग असंभव है। शाम को कोलारा गेट से सफारी का बुकिंग किया गया था। मीनी बस का बुकिंग था इस कारण अन्य पर्यटक भी थे। बहुत घूमने के बाद लगभग सूर्यास्त के करीब हम एक जलस्रोत के करीब पहुंचे। अचानक दूसरे छोर पर एक तैरता हुआ बाघ दिखाई दिया। गाइड ने उसका नाम सोनम/टी 20 बताया। सभी लोगों ने अपने कैमरे में इस तसवीर को सदा के लिए कैद कर लिया। गैस्ट हाऊस में वापिस लौटते वक्त एक स्लॉथ भालू भी दिखा।

दूसरे व आखरी दिन कुशवंडा (Kushwanda) गेट से प्रवेश मिला । यह गेट जंगल के बफर ज़ोन में ले जाता है । थोड़ी निराशा थी कि जब कोर ज़ोन में ही बाघों का दर्शन नहीं हुए तो बफर ज़ोन में क्या होगा ? गाइड ने आस दिलाई की इतनी गर्मी में जानवर भी बेबस हो कर जल स्रोतों के करीब जरूर आएगा । जब हम एक तालाब के करीब पहुंचे तो देखा काफी लोग बड़े-बड़े महंगे कैमरों के साथ बेसबरी से इंतजार कर रहे हैं । गाइड से पता चला कि उनमें से कुछ मशहूर वन्यजीव छायाचित्रकार भी है । दिन के करीब 8 बजे थे । सूरज गर्मी उगल रहा था, लगभग 42 डि.से. तापमान था । करीब 5 मिनट के बाद एक सन्नाटा सा छा गया । मन में न जाने एक घबराहट व उत्सुकता सी होने लगी । तभी जंगल के बीच से जंगल का राजा, पूरे आत्मविश्वास के साथ सीना तानकर अपने शावकों के साथ पानी की ओर आया । सब बहुत खुश हो गए । गाइड ने सबसे चुप रहने का इशारा किया और कैमरे का फ्लैश बंद कराया । कुछ देर तक वे सभी इधर-उधर चल रहे थे मानो हमारे लिए कैट-वॉक कर रहे हों । गाइड ने इस सुंदर सम्राट का नाम शर्मिली बताया और यह भी बताया कि शर्मिली के बच्चे 9 महीने के हैं लेकिन वास्तव में वे बड़े दिख रहे थे । लू चल रही थी । सूरज भी अपना पूरा दम दिखा रहा था । शर्मिली भीषण गर्मी से परेशान लग रही थी और फिर धीरे से पानी में उतर गई । उसके साथ उसके शावक भी पानी में उतर गये । शर्मिली अपने शावकों के साथ खूब अठखेलियां कर रही थी । सब जमकर नहा रहे थे । सब पानी में खेल रहे थे और कभी-कभी हमारी तरफ देख कर आँख मार रहे थे । जैसे ही हम लोगों की थोड़ी सी भी आवाज़ आती शर्मिली सतर्क हो जाती और गुर्राने लगती । लेकिन शावक दूनिया की परवाह किये बिना, पानी में भीगते, नहाते, तैरते, डूबते मजे ले रहे थे । उन सब ने तगड़ा शिकार किया था व शरीर की गर्मी को भगाने के लिए व अपने आप को ठंडा रखने के लिए पानी में भिगने का पूरा आनंद ले रहे थे । लगभग 1 घंटे तक हम सब उनको 100 मीटर की दूरी पर से देख प्रकृति के इस अद्भूत सृजन की मन ही मन सराहना कर रहे थे ।

मैंने इस विहंगम दृश्य को अपनी आखों में कैद कर लिया है जिसे मैं कभी भूल नहीं पाऊंगी ।

## “ पहरदार ”

श्री ओ. पी. चौधरी,  
मौसम विज्ञानी 'बी'

कल अपनी पुरानी सोसाइटी में गया था। वहाँ मैं जब भी जाता हूँ, मेरी कोशिश होती है कि अधिक से अधिक लोगों से मुलाकात हो जाए एवं उनका कुशल क्षेम जान लूँ ।

वहाँ पहुँचकर गार्ड से बात ही कर रहा था कि “और क्या हाल है आप लोगों काठ”, तभी मोटारसाइकिल पर एक आदमी आया और झुक कर प्रणाम किया ।

“भैया प्रणाम”

मैंने पहचानने की बहुत कोशिश की, ऐसा लग रहा था कि इस शख्स को मैंने कही देखा है, पर याद नहीं आ रहा था । फिर उसी ने कहा

“भैया पहचाने नहीं”? हम रामू हैं रामू उधर वाली आंटीजी के घर काम करते थे ।

मैंने पहचान लिया, अरे ये तो रामू है, 'सी' - ब्लॉकवाली आंटीजी का नौकर ।

अरे रामू तुम तो बहुत तंदुरुस्त हो गये हो । आंटी कैसी है ?

रामू हँसा,

आंटी तो गई ?

उनका बेटा विदेश में था , वहीं चली गई क्या ? ठीक ही किया उन्होंने, यहाँ अकेले रहने का क्या मतलब था ?

अब रामू थोड़ा गंभीर हुआ । उसने हँसना रोक कर कहा,

‘भैया, आंटीजी भगवान जी के पास चली गई’।

“भगवान जी के पास” ? ओह। कब?

रामू ने धीरे से कहा,

“दो महीने हो गए।”

‘क्या हुआ था आंटी को’?

‘कुछ नहीं। बुढ़ापा ही बीमारी थी । उनका बेटा भी बहुत दिनों से नहीं आया था । उसे याद करती थीं । पर अपना घर छोड़कर वहाँ नहीं गई । कहती थी कि यहाँ से चली जाऊंगी तो मकान पर कोई कब्ज़ा कर लेगा, बहुत मेहनत से ये मकान बना हैं ।

“हाँ वो तो पता ही है” । तुमने खूब सेवा की अब तो वो चली गई, यहाँ क्या करोगे ?

मैं क्या करूँगा भैया, पहले अकेले था । अब गाँव से फैमिली को ले आया हूँ दोनों बच्चे और पत्नि अब यहीं रहते हैं ।

यहीं मतलब ? आंटी के जाने के बाद उनका बेटा आया था । एक हफ्ता रुककर चले गए । मुझसे कह गए कि घर देखते रहना । चार कमरे का इतना बड़ा फ्लैट है । मैं अकेले कैसे देखता? भैया ने कहा कि तुम यहीं रह कर घर की देखभाल करते रहो । वो वहाँ से पैसे भी भेजने लगे हैं । और सबसे बड़ी बात ये कि मेरे बच्चों को यहीं स्कूल में एडमिशन मिल गया है। अब आराम से हूँ । कुछ कुछ काम बाहर भी कर लेता हूँ । भैया सारा सामान भी छोड़ गए हैं । कह रहे थे कि दूर देश ले जाने में कोई फायदा नहीं ।

मैं हैरान था । रामू पहले साइकिल से चलता था । आंटी थी तो उनकी देखभाल करता था । पर अब आंटी चली गई तो वो चार कमरे के मकान में आराम से रह रहा है । आंटी अपने बेटे के पास नहीं गई कि कहीं कोई मकान पर कब्ज़ा न कर ले ।

बेटा मकान नौकर को दे गया है, ये सोच कर कि वो रहेगा तो मकान बचा रहेगा । मुझे पता है, मकान बहुत मेहनत से बनते हैं । पर ऐसी मेहनत किस काम की जिसके आप सिर्फ ‘पहरेदार’ बनकर रह जाँँ ?

मकान के लिए आंटी बेटे के पास नहीं गई । मकान के लिए बेटा माँ को पास नहीं बुला पाया । सच कहें तो हम लोग मकान के पहरेदार ही हैं ।

जिसने मकान बनवाया वो अब इस दुनिया में नहीं है । जो है उसके बारे में तो रामू भी जानता है कि वो अब यहाँ कभी नहीं आएँगे ।

मैं ने रामू से पूछा कि, तुमने भैया को बता दिया है कि तुम्हारी फैमिली भी यहाँ आ गई है ? ‘इसमें बताने वाली क्या बात है भैया ? वो अब कौन यहाँ आने वाले हैं ? और मैं अकेला यहाँ क्या करता ? जब आएँगे तो देखेंगे । पर जब माँ थी तो आए नहीं, उनके बाद क्या आना ? मकान की चिंता है, तो वो मैं कही लेकर तो जा नहीं रहा । मैं तो देखभाल ही कर रहा हूँ ।

रामू फिर हँसा ।

रामू से मैंने हाथ मिलाया । मैं समझ रहा था कि रामू अब नौकर नहीं रहा । वो मकान मालिक हो गया है ।

हँसते - हँसते मैंने रामू से कहा,

‘भाई जिसने ये बात कही कि मूर्ख आदमी मकान बनवाता है, बुद्धिमान आदमी उसमें रहता है, उसे जिंदगी का कितना गहरा तजुर्बा रहा होगा’ । रामू ने धीरे से कहा साहब सब किस्मत की बात है । वहाँ से चल पड़ा था यह सोचते हुए कि सचमुच सब किस्मत की बात है । लौटते हुए रामू की हँसी मेरे कानों में गुँज रही थी ‘मैं मकान लेकर कहीं जाऊँगा थोड़े ही, मैं तो देखभाल ही कर रहा हूँ ।

मैं सोच रहा था, मकान लेकर कौन जाता है ? सब देखभाल ही तो करते हैं ।

आज यह किस्सा जानकर लगा कि हम सभी क्या कर रहे हैं..... जिंदगी के चार दिन हैं मिलजुल कर हँसते - हँसते गुजार लें..... क्या पता कब बुलावा आ जाए ..... सब यहीं धरा रह जाएगा और हम इस दुनिया से - रूखसत हो जाएंगे ।

-----

## माँ की ममता

श्री वी. यू. देशपाण्डे,  
मौसम विज्ञानी - 'बी'

जीवन में हम क्या है कैसे हैं यह महत्वपूर्ण नहीं है लेकिन अगर अपने ऊपर माँ की ममता और प्यार हो तो मानसिक रूप से भी बीमार बच्चे के भविष्य और नियति को बदला जा सकता है और बच्चा माँ के आंचल से दुनिया का सबसे महान व्यक्ति भी बन सकता है।

थॉमस एडिसन ऐसे ही भाग्यशाली बेटे हुए हैं कि जिन्हें माँ की ममता की वजह से दुनिया में श्रेष्ठता प्राप्त हुई। हमारा जीवन छोटा है। आप जिन्हें चाहते हैं जो कोई भी आपका हो उनके साथ अधिक से अधिक समय व्यतीत करें क्योंकि सबको अपनों के प्यार की जरूरत पड़ती है और ऐसा करने में हम देरी कर देते हैं तो क्या पता कब हम अपनों से दूर हो जाए और फिर अपनों का प्यार पाना नामुमकिन हो जाए। इसलिए जीवन के प्रत्येक क्षण में जीवन का आनंद लें क्योंकि आपके परिवार से बढ़कर कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं है।

इस दुनिया में चाहे कितने भी ऋण और कर्ज हो चुकाए जा सकते हैं लेकिन माँ के प्यार और ममता के मोल को कभी भी चुकाया नहीं जा सकता है। यहाँ तक कि एक माँ अपने पुत्र को इस संसार में पाने के लिए सारे दुखों को भूल जाती है। एक संतान जो की माँ के कलेजे का टुकड़ा होता है, जिसे चाहकर भी माँ अपने संतान को कभी भी अपने से अलग होते हुए नहीं देखना चाहती है। माँ चाहे कितना भी दुःख में क्यों न हो, लेकिन एक माँ ही अपने संतान के हित की बात हर घड़ी सोचती रहती है इसलिए हमें भूलकर भी माँ की ममता और प्यार का मोल नहीं लगाना चाहिए। अगर कुछ देना ही है तो हमें अपनी माँ के प्रति हमेशा प्रेम बनाये रखना चाहिए क्योंकि इस दुनिया में हमारी माँ जैसी दूसरी चीज भी नहीं है।

**“लबों पर उसके कभी बद दुआ नहीं होती**

**एक माँ है जो मुझसे कभी खफा नहीं होती”**

माँ इस भावना को शब्दों में बांधना कठिन है, वो ईश्वर की बनाई ऐसी कृति है, जिसे खुद ईश्वर अपने सबसे करीब पाता है। इसलिए माँ ईश्वर का दूसरा रूप माना जाता है।

**सख्त राहों में भी आसान सफ़र लगता है,**

**ये मेरी माँ की दुआओं का असर लगता है।**



मांगने पर जहां पूरी मन्नत होती है  
माँ के पैरों में ही तो वो जन्नत होती है ।

सब कुछ मिल जाता है दुनिया में मगर याद रखना कि बस माँ - बाप नहीं मिलते,  
मुरझा कर जो गिर गए एक बार डाली से ये ऐसे फूल हैं जो फिर नहीं खिलते ।

माँ भगवान के द्वारा बनाया गया सबसे बेहतरीन उपहार है । हाँ, ये एक उपहार ही  
तो है जो हमको खुद से भी ज्यादा प्यार करती है ।

-----

## विकास में तकनीक की भूमिका - वरदान है या अभिशाप

ऑचल कुशवाहा,  
वैज्ञानिक सहायक

तकनीक के लाभों को इस स्तर पर नहीं मापा जाना चाहिए कि अमीर और कितना अमीर हुआ है अपितु इस आधार पर कि 'तकनीक ने गरीबों के जीवन स्तर के सुधार में किस प्रकार सहायता की है ।'

तकनीक का अर्थ है - विज्ञान का अनुप्रयोग । यदि पलायन वेग की खोज एक विज्ञान है तो उसका प्रयोग करके उपग्रहों को लॉच करना तकनीक है । अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी (Space Technology) से प्राप्त उपलब्धियों से भारत को स्वयं को परिवर्तित करने में सहायता मिलती है।

जैसे 1999 में ओडिशा में आए चक्रवात से 10,000 लोगों की मृत्यु हुई, बाद में भारत ने मौसम उपग्रहों का विकास किया और हाल में ही आए 'हुदहुद' चक्रवात से इस बार काफी कम जान-माल की हानि हुई । अतः इससे हमें पता चलता है कि तकनीक, विकास से किस तरह सम्बंधित है ।

सेवा क्षेत्र में अभूतपूर्व वृद्धि का श्रेय तकनीक को ही जाता है जैसे - ई कॉमर्स, साफ्टवेयर सर्विसेस । इन सभी कारकों के द्वारा, वृद्धि को बल मिला जिससे विकास में और सहायता मिली। कृषि में उत्पादन, नीम लेपित यूरिया के कारण बढ़ा । औद्योगिक क्षेत्रों में भी तकनीक की काफी बड़ी भूमिका है और स्टील उत्पादन, सम्बंधित गतिविधियों में अपार सम्भावनाएं हैं । बहुत से असाध्य रोगों का इलाज आज तकनीकी उन्नयनों के चलते संभव हो पाया है । आज भी अनेक गांव स्वास्थ्य सुविधाओं से वंचित है - ग्रामीण क्षेत्रों में काम न करने की डॉक्टरों की गैर-इच्छा शक्ति के चलते । अतः इसमें टेलीमेडिसिन के द्वारा सुधार किया जा सकता है ।

आज आरटीआई, ऑनलाइन फाइलिंग के चलते अधिक शक्तिशाली हो गया है My Govt. पोर्टल द्वारा सरकार को सुझाव देना और सरल हो गया है । जिसका उल्लेख प्रधानमंत्री जी ने मन की बात में किया था ।

तकनीक ने लोगों को जोड़ने और सामाजिक एकीकरण में भी सहायता की है जिससे (संगठन सामाजिक पूंजी) सोशल कैपिटल के निर्माण में मदद मिलती है ।

तकनीक हमें नई नौकरियां भी प्रदान करती है । हालिया रिपोर्ट में यह बात सामने आई है कि यदि तकनीक 10 रोजगार को खत्म करती है तो वह 50 नये रोजगार दूसरे रूप

में उत्पन्न करती है । जापान, दक्षिणी कोरिया जैसे देशों में तकनीक का काफी उन्नयन हुआ है ।

इसके अतिरिक्त, तकनीक से वैश्वीकरण को बढ़ावा मिलता है जिससे सीमाएं लगभग अप्रासंगिक हो जाती हैं ताकि भारतीयों को पूरी दुनिया में कहीं भी प्लेसमेण्ट मिल सके । प्रकृति में संसाधन सीमित है । लोग उनका दोहन करने से भी नहीं रुक रहे हैं किन्तु तकनीक के द्वारा हम पर्यावरण का संरक्षण कर सकते हैं । नवीकरणीय ऊर्जा (Renewable Energy) के क्षेत्र में विकास से प्रदूषण को कम करने में मदद मिलती है ।

विज्ञान और तकनीक की उन्नति ने लोगों के जीवन को प्राचीन समय से अधिक उन्नत बना दिया है । तकनीक की उन्नति ने जहाँ एक तरफ लोगों की जीवनशैली को प्रत्यक्ष और सकारात्मक रूप से प्रभावित किया है वहीं दूसरी ओर इसने लोगों के स्वास्थ्य पर अप्रत्यक्ष और नकारात्मक प्रभाव भी डाला है ।

नई तकनीक जैसे नाभिकीय संलयन (fusion) पूरी दुनियां को नष्ट कर सकती है आज युद्ध अधिक घातक हो गये हैं । हम सभी जापान की हालत जानते हैं - द्वितीय विश्व युद्ध के बाद ।

क्या होगा यदि परमाणु बम आतंकवादियों के हाथ लग गया तो, यह कल्पना करना भी अत्यंत कठिन है । आज तकनीक के माध्यम से आतंकवादियों का हमला करना आसान हो गया है । भर्ती प्रक्रिया, फण्ड ट्रांसफर (बिटक्वाइन्स के माध्य से) आतंकवादी बड़े पैमाने पर अपने विचारों को फैलाने के लिए ट्विटर, यू-ट्यूब इत्यादि का प्रयोग कर रहे हैं ।

विनाशात्मक तकनीक अत्यंत खराब होती है । टेलीकॉम सेक्टर में आज रिलायंस जियो के चलते अनेक कम्पनियां बड़े घाटे में आ गयी है जो कि उपभोक्ताओं के लिए बड़े फायदे का सौदा है लेकिन इससे हजारों रोजगार दिए गए हैं ।

विकासित और विकासशील देशों के मध्य एक अन्तर है । अब तकनीक के बल पर विकसित देश नवसाम्राज्यवाद को अपना सकते हैं । तकनीकी उन्नयन (upgradation) के कारण आज अनेक अफ्रिकी देश पश्चिमी देशों के चंगुल में फंसे हैं ।

निष्कर्ष तौर पर यदि कहा जाए तो कोई निर्णय नहीं कर सकता कि तकनीक हमारे विकास के लिए वरदान है या अभिशाप ? किन्तु इतना निश्चित है कि तकनीक के द्वारा ही हम अपनी समस्याओं का बेहतर समाधान खोज सकते हैं । इसका अर्थ है कि तकनीक एक विचार के रूप में अच्छा है किन्तु इसका खराब क्रियान्वयन चिन्ता का विषय है ।

-----

## तीन तलाक़ का फैसला

संध्या रविकिरण,  
मौसम विज्ञानी 'बी'

सर्वोच्च न्यायालय के दिनांक 22 अगस्त, 2017 के फैसले से भारत में तीन तलाक़ अवैध घोषित किया गया है। यह फैसला पाँच न्यायाधीशों की साझा समिति ने दिया है। दो न्यायाधीशों का मानना है कि तीन तलाक़ के 25 वें कलम से संविधान का संरक्षण होने की वजह से यह संवैधानिक है।

दो न्यायाधीशों का मानना है कि तीन तलाक़ से संविधान के 14 कलम से विसंगत होने की वजह से असंवैधानिक है, परंतु एक न्यायाधीश के मतानुसार तीन तलाक़ इस्लामिक तत्वसंगत नहीं है, इसलिए अवैध है। इस ऐतिहासिक फैसले पर पाँचों न्यायाधीशों की अलग-अलग राय है। जैसे न्यायाधीश नरीमन और न्यायाधीश ललित का मानना है कि तीन तलाक़ देश के कानून का हिस्सा है, इसलिए इसकी विसंगत होने की वजह से ये असंवैधानिक है और इसलिए इसकी समीक्षा मूलभूत हक के दायरे में रखकर होनी चाहिए। परंतु एक न्यायाधीश के मतानुसार तीन तलाक़ इस्लामिक तत्वसंगत नहीं है, इसलिए अवैध है। तीन तलाक़ को धार्मिक स्वतंत्रता का संरक्षण नहीं है।

दो न्यायाधीशों का मानना है कि, "हनाफ़ी" न्यायशास्त्र में तीन तलाक़ का जिक्र किया गया है, जो पाप माना जाता है। इसीलिए वो 25(1) कलम के नीचे नहीं आता।

न्यायाधीश खेटर और न्यायाधीश नज़ीर की धारणा बिल्कुल ही उल्टी है। "तलाक़ ए बिद्दात", ये सुन्नी मुसलमानों के व्यक्तिगत कानून का हिस्सा है, और 1400 वर्ष पुरानी प्रथा है, जो सभी मुसलमानों के धर्म पर श्रद्धा का हिस्सा है और इसीलिये इसे 25 कलम के अनुसार (धार्मिक स्वतंत्रता) संरक्षण मिलना चाहिए। न्यायमूर्ति ने निर्णय पत्र में लिखा है कि "धर्म श्रद्धा का हिस्सा है, तर्कशास्त्र का नहीं। संविधान के अनुसार प्रत्येक धर्म के लोगों को उनके रीति-रिवाज का पालन करने का पूरा हक है। आज के आधुनिक युग में अगर उसी समाज के कुछ लोगों को धर्म के रीति-रिवाज मंजूर नहीं हैं, फिर भी वे उसे चुनौती नहीं दे सकते।

धर्म ही लोगों को संगठित करता है, या कहें तो एक श्रद्धा के लोगों को एक साथ बांधकर रखता है। उनकी एक अलग पहचान है, इसीलिये 25 वें कलमानुसार धार्मिक स्वतंत्रता को सुरक्षित रखा गया है। पर धर्म के नाम पर स्त्री और पुरुष में असमानता हो

तो ऐसे धर्म का क्या मतलब ? आगे चलकर ये विवाद भी आ सकता है कि जादुटोना भी श्रद्धा का हिस्सा है ।

पाँचवे न्यायमूर्ति जस्टिस कुरियन ने अपना अलग मत रखा, जो रिवाज़ पाक कुरान में अयोग्य माना जाता है, वह शरीयत में योग्य कैसे हो सकता है? जो धर्मशास्त्र में गैर है, वो क़ानून के मुताबिक भी गैर ही होना चाहिए । दो विरुद्ध तथा दो इसके पक्ष में, न्यायमूर्ति का मत निर्णायक होता है । और इसी मत से भारत में तीन तलाक़ क़ानूनन अवैध माना गया है ।

अभी प्रमुख न्यायमूर्ति जस्टिस जे.एस.खेटर हाल ही में सेवा निवृत्त हो गये हैं और धर्म की परिभाषा में क्या आता है? और क्या नहीं आता? यह सवाल अभी भी बाकी है। इसका परिणाम धर्म निरपेक्षता तथा कौटुम्बिक क़ानून पर हमेशा ही होता रहेगा।

अब प्रश्न ये है कि सर्वोच्च न्यायालय ने इस पर कोई टिप्पणी नहीं की कि महिलाओं के साथ होने वाला भेद-भाव लिंगधारित भेदभाव है और वह स्त्री और पुरुष की समानता के हक को भंग करता है। पूरे **निकलपत्र** में महिलाओं के हक पर या समान हक पर कहीं भी चर्चा नहीं की गई।

1950 से सुप्रीम कोर्ट ने इस सवाल को भी टाला है कि क्या पारिवारिक क़ानून संविधान के कक्षा के बाहर है?

तीन तलाक़ पर दिया गया फैसला सिर्फ मुस्लिम महिलाओं के लिए ही नहीं बल्कि सभी महिलाओं के लिए महत्वपूर्ण है। क्योंकि सभी पारिवारिक क़ानून थोड़े-बहुत महिलाओं के बारे में भेद-भाव करने वाले हैं। इस ऐतिहासिक फैसले से तीन तलाक़ अवैध माना गया है। और इसका फ़ायदा निश्चित रूप से होने वाला है।

दूसरी बार केंद्र की सत्ता में आने के बाद मोदी सरकार ने मुस्लिम महिलाओं को न्याय दिलाने के लिए तीन तलाक़ के खिलाफ संसद में बिल लाया था।

इस बिल को पहले लोकसभा से पारित किया गया। संसद से पारित होने के बाद मुस्लिम महिला (विवाह अधिकार संरक्षण) विधेयक-2019 पूरी तरह क़ानून बन चुका है। इसको सरकारी गजट में भी प्रकशित भी किया जा चुका है। सरकारी गजट में प्रकाशित होने के साथ ही क़ानून लागू मान लिया जाता है।

इसके तहत अगर कोई मुस्लिम अपनी पत्नी को बोलकर, लिखित या अन्य तरीके से तीन तलाक़ देता है, तो इसको अपराध माना जाएगा। इसके लिए पति को तीन साल की जेल हो

सकती है और जुर्माना देना पड़ सकता है । इसमें यह भी प्रावधान किया गया है की आरोपी पति को मजिस्ट्रेट कोर्ट से ही जमानत मिलेगी। साथ ही मजिस्ट्रेट पीड़ित महिला का पक्ष सुने बिना तीन तलाक देने वाले पति को जमानत नहीं दे पाएंगे ।

-----

## जीवन संघर्ष

अचिंत्य जायसवाल,  
वैज्ञानिक सहायक

जीवन संघर्षों की गाथा, रे मन इनसे घबराना क्या

है सथपथ कठिन जरूर मगर

बाधाओं से रुक जाना क्या

इस जग में सबका बन प्राणी

ये जीवन है दुख की बाती

इसमें सुख से तू मोह न कर

सतकर्म बने तेरे साथी ।

हर रस्ता डगर आसान नहीं

तुझको बस चलते जाना है ।

हार का मतलब जीत सही

दिल जीता तो ये माना है ।

अंतर्मन का द्वंद सुना दू क्या

जीवन का नक्श बता दू क्या

होकर हार्थों मन हार के तू

याद रख ये मौसम है जो बदल जाना

-----

## अशोक का हृदय परिवर्तन

मनोजकुमार,  
वैज्ञानिक सहायक

हुआ शंखनाद, रण खत्म, रवि अस्त,  
विश्रांत नयन, मन है अधीर ।  
रक्त में मिश्रित हुआ स्वेद,  
बाहें अशस्त, खाली तुणीर ॥

शर खंडित, धरा रक्त रंजित,  
श्वानों का भयव्यापी क्रन्दन ।  
निजदल, रिपुदल सब आहत-हताहत,  
धड़ में चढ़ करती मृत्यु ताण्डव-नर्तन ॥

लाशे अशेष, हग निर्निमेष,  
लोहित से लथपथ है शरीर ।  
क्या मिला मुझे इस रण से, प्रण से,  
लाशें अनन्त, असह्य पीर ॥

सर कटे, कटे सब हाथ पैर,  
चीखों से काँप उठा अम्बर ।  
लाशों को काट खा रहे गिद्द-श्वान,  
ये युद्ध नहीं था, था महासमर ॥

यह हृदय-विदारक दृश्य देख,  
जागा उसके अंतस का ज्ञान ।  
सम्राट ने छोड़ दिया फिर युद्ध,  
अपनाया धम्म का पथ महान ॥

-----



## माँ

पूनम चौरसिया,  
वैज्ञानिक सहायक

माँ ! कितनी सुन्दर है  
तेरी ममता की परछांयी,  
जब जब भी मैं रोयी,  
तुझे ही संग पायी ।  
जब मैं इस जहां में आयी,  
असीम खुशियां तुमसे ही पायी,  
तेरे आँचल में जो सुख है माँ !  
कहीं और न मैंने पायी ।  
ताने सुनकर जहान के भी,  
तूने मेरी आकांक्षाएं पूरी करायी ।  
दुनिया की सारी दौलत,  
तेरे आगे फीकी है,  
तू ही एक सच्ची लगे  
सारी दुनिया झूठी है ।  
भगवान नहीं आ सकता था  
हर जीव-जगत के पास,  
इसलिये माँ के रूप में  
दे दी उसने सौगात ।  
ताउम्र तुम्हारी सेवा की  
प्यासी रहूँ निष्काम,  
छोड़ काम दुनिया के सारे अब

रौशन करना है तेरा नाम ।  
तूने अपना धर्म निभाया  
अब है मेरी बारी,  
तेरी ममता की तारीफ करना  
समर्थता नहीं है हमारी ।

-----

## संघर्ष

श्री अश्विनी कुमार प्रसाद,  
वैज्ञानिक सहायक

सफलता मिल ही जाएगी एक दिन संघर्ष करते-करते ही सही ।

असफल तो वे हुए जिसने कभी संघर्ष किया ही नहीं ॥

मंजिल मिल ही जाएगी एक दिन भटकते-भटकते ही सही ।

गुमराह तो वो है, जो घर से निकले ही नहीं ॥

जिंदगी संवर जाएगी एक दिन सपने देखते-देखते ही सही ।

निराश तो वो हुए जिसने कभी सपने देखे ही नहीं ॥

हिंदी पखवाड़ा में सफलता मिल ही जाएगी एक दिन भाग लेते-लेते ही सही ।

असफल तो वो हुए जिसने कभी भाग लिया ही नहीं ॥

खुशियाँ मिल ही जाएगी एक दिन रोते-रोते ही सही ।

कमजोर दिल के है वो, जो हँसने की सोचते ही नहीं ॥

चंद्रयान-2 से संपर्क टूटा है लेकिन हौसले से नहीं,

चंद्रयान-3 को सफलता मिल ही जाएगी एक दिन संघर्ष करते-करते ही सही ।

असफल तो वो है जो चाँद परे जाने के बारे में सोचते ही नहीं ॥

सफलता मिल ही जाएगी एक दिन संघर्ष करते-करते ही सही ।

असफल तो वो हुए जिसने कभी संघर्ष किया ही नहीं ॥

-X-X-X-

## एक बच्चे का सफर

नेहा,  
वैज्ञानिक सहायक

एक बच्चा था छोटा सा,  
थोड़ा मासून, थोड़ा खोटा सा ।  
सारा दिन घर में मस्ती करता था,  
इधर-उधर भागता फिरता था ।  
फिर एक दिन ऐसा आया,  
सपनों में भी नहीं था उसे भाया ।  
ये दिन तो आना था,  
जब उसे स्कूल जाना था ।  
अपने नाजुक कन्धों पर बैग का बोझ उठाना था,  
नए सफर की ओर अपना पहला कदम बढ़ाना था ।  
पर वो मासूम, नहीं जाना चाहता था,  
वो मम्मी-पापा के पास ही रहना चाहता था ।  
ना जाने क्यों वो स्कूल जाने से डरता था,  
इसके लिए बहाने भी बहुत करता था ।  
वो रोता भी था, चिल्लाता भी था  
बार-बार एक ही बात सोचता,  
क्या मम्मी-पापा मुझसे प्यार नहीं करते,  
और अगर करते हैं, तो मुझे अपने पास क्यों नहीं रखते ।  
पर वो क्या कर सकता था,  
इस दुनिया में तो उसे आना ही था ।  
उसे थोड़ी ना पता था

आज जो उसके लिए हैं बंदगी,  
कल वही बन जाएगी उसकी जिंदगी ।  
वो दोस्ती, वो मस्ती,  
उन सबमें वो अब खोने लगा ।  
और धीरे-धीरे वे उस दुनिया का ही होने लगा ।  
वो उसका रोज़ देर से स्कूल जाना,  
काम ना करने के नए बहाने बनाना ।  
सीट के लिए लड़ना-झगड़ना,  
दोस्तों के संग रुठना-मनाना,  
जन्मदिन वाले दिन नए कपड़े पहने के जाना ।  
और हर पल में, बस खुशियाँ ही खुशियाँ मनाना ।  
फिर भी उसे रहता था छुट्टी का इंतजार,  
रविवार तो जैसे लाता था उसके लिए बहार,  
पर खींच ही लेता था दोस्तों का प्यार ।  
धीरे-धीरे दिन बदलते गए,  
ख्वाब सजते गए ।  
नए-नए पंछी अपनी उड़ान भरते गए ।  
कहा करता था वो,  
बड़ी मुश्किल से इतने साल सह गया,  
फिर अब क्यों लग रहा हि कि कुछ पीछे रह गया ।  
ना भूलने वाली कुछ यादें रह गयी,  
यादें, जो अब जीने का सहारा बन गयी ।  
कुछ पल यहाँ थे उसके बड़े ही कमाल के,  
कुछ यादें उसने रखी भी हैं संभाल के ।

पर एक बार फिर वो दिन तो आना था,

जब उसे यहाँ से भी जाना था ।

फिर से एक नई दुनिया को अपना बनाना था ।

कल वो यहाँ आना नहीं चाहता था,

आज वो यहां से जाना नहीं चाहता है ।

कल वो यहां आने की वजह से रो रहा था,

और आज, आज वो यहाँ से जाने की वजह से,

रो रहा है ।

ये कैसी रीत है जिन्दगी की,

कि एक पंछी अपनी उड़ान ही रोकना चाह रहा है

कल तक कर रहा था,

वो जिसे छोड़ने का इंतजार

अब उस पिंजरे से ही हो गया था उसे प्यार ।

-----

## में कहाँ जाऊं बस इतना बता दो मुझे

योगेन्द्र सिंह,  
वैज्ञानिक सहायक

तुम्हें ये हक है कि तुम मुझसे बात ना करो  
मुझको ऐसे भूलो कि कभी याद न करो  
तुम्हें जो मर्जी है सजा दो मुझे  
में कहाँ जाऊं बस इतना बता दो मुझे

मेरी इस नींद की वजह तुम ही तो हो  
मेरी इस उम्मीद की वजह तुम ही तो हो  
कभी आओ इस नींद से जगा दो मुझे  
में कहाँ जाऊं बस इतना बता दो मुझे

में भी जानता हूँ कि वो पहले का जमाना नहीं  
तुम भी जानती हो कि मेरा कोई ठिकाना नहीं  
तुम ही कहीं अपनी जिंदगी में ठिकाने लगा दो  
में कहाँ जाऊं बस इतना बता दो मुझे

खामोश दोपहर की तरह हो चला हूँ अब मैं  
बिलकुल पत्थर की तरह हो चला हूँ अब मैं  
कभी रख के मेरे सीने पे हाथ रुला दो मुझे  
में कहाँ जाऊं बस इतना बता दो मुझे

अब भी कहीं मैंने अपने दिल को ये बताया नहीं है  
कि तुमने छोड़ तो दिया है मगर ठुकराया नहीं है  
मेरी खातिर दो एक ठोकर और ठुकरा दो मुझे  
लेकिन.....

में कहाँ जाऊं बस इतना बता दो मुझे

## चलते चलते

श्री हरिष देशमुख,  
सहायक

सफर जिन्दगी का यूं ही, कट जाएगा चलते चलते

उम्र भी यूं ही गुज़र जाएगी, चलते चलते

वो होंगे कोई और, जो हर मोड़ पर राह बदल जाएंगे  
जिनकी चलने की आदत है, वो रह जाएंगे चलते चलते

मुडकर न देखो, के क्या पीछे छोड़ गए हो,  
तुमको मिल जाएगी, तुम्हारी मंज़िल चलते चलते

थक हार कर जो बैठ गए, उनको भला अंतिम मंज़िल कैसे मिलेगी  
है मंज़िलों की आस जिनको, वो मंज़िल पा लेंगे चलते चलते

धुप हो या छांव हो, या छालों से भरे तुम्हारे पाँव हो,  
कहीं रुक ना जाना, चाहे ठोकरे भी मिले तुमको चलते चलते

हिम्मत ना हारो, ना मुश्किलों से कभी डरो,  
क्या पता कहाँ तुमको सुकून मिल जाएगा चलते चलते

-x-x-x-



## पापों का बोझ

सुश्री मोनिका संघवाहिया,  
वैज्ञानिक सहायक,

पापों का बोझ कब तक ढोएगा आदमी ?

क्या कभी चैन से भी सोएगा आदमी ?

लाखों पेड़ काट डाले, कुदरत पर हमला बोल दिया,  
जल में उद्योगों का कचरा, विष वायु में घोल दिया,  
जल-थल-वायु दूषित कर, स्वनाश का रास्ता खोल दिया,  
प्रकृति भी नष्ट हुई, उसने सब डावाँडोल किया,  
कभी बड़ा कहर टूटा तो रोएगा आदमी ।

पापों का बोझ कब तक ढोएगा आदमी ?

क्या कभी चैन से भी सोएगा आदमी ?

पैदा ही ना होगी कन्या, गर्भ में उसको मार दिया,  
दहेज की खातिर वधुओं को, मृत्यु के घाट उतार दिया,  
निर्बल अबला समझ नारी पर, कितना अत्याचार किया,  
नारी शक्ति, नारी जननी, सोचा ना कभी विचार किया,  
पापों में खुद को कितना और डुबोएगा आदमी ।

पापों का बोझ कब तक ढोएगा आदमी ?

क्या कभी चैन से भी सोएगा आदमी ?

पानी जैसा रक्त बहा रहा, मानव जान हुई सस्ती,  
बम-बंदूकें, परमाणु बम, खतरे में मानव बस्ती,  
आतंकवाद का विष फैलाकर, मिटा रहा खुद की हस्ती,

खुद ही उसमें छेद कर रहा, कैसे पार हुए कश्ती,  
पाएगा वैसा ही जैसा बोएगा आदमी ।

पापों का बोझ कब तक ढोएगा आदमी ?  
क्या कभी चैन से भी सोएगा आदमी ?

सूखा गला, आंत सूखी है, मानवता बीमार हुई,  
बच्चे, औरत भूख-नंगे, मानवता शर्मसार हुई,  
ना रोटी कपड़ा मकान है, मानवता लाचार हुई,  
आखिर कब इन धब्बों को धोएगा आदमी ।

पापों का बोझ कब तक ढोएगा आदमी ?  
क्या कभी चैन से भी सोएगा आदमी ?

चल उठ मानव, अब उठ जा, नव भोर हुई कुछ करना है,  
भूख आतंकवाद मिटा, मानवता का दुख हरना है,  
प्रेम-स्नेह के मरहम से, सबके घावों को भरना है,  
सब बंधुजन को संग लेकर, भवसागर पार उतरना है,  
जाग! कब तक कुंभकर्ण सा सोएगा आदमी ।

पापों का बोझ कब तक ढोएगा आदमी ?  
क्या कभी चैन से भी सोएगा आदमी ?

-----